REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

बौद्धिक चेतना को जीवंत करने मे आधुनिक शिक्षा की भूमिका

प्रिया कुमारी
एम० ए०, (समाजशास्त्र),
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सार

आधुनिक शिक्षा ने एक बौद्धिक चेतना को जीवंत किया है। राष्ट्रवाद, उदारवाद तथा स्वतंत्रता के प्रति लोगों को उत्प्रेरित किया है। भारत में एक नवजाग्रत बौद्धिक वर्ग के उदय का श्रेय भी आधुनिक शिक्षा को प्राप्त है। सामाजिक परिवर्तन में इस नवजाग्रत बौद्धिग वर्ग का योगदान उल्लेखनीय रहा है। प्रो0 एम.एन. श्रीनिवास ने उल्लेख किया है कि आधुनिक शिक्षा के कारण सामाजिक संरचना के विविध पक्षों में तीव्र परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न हुई है। एक नई बौद्धिक चेतना का उदय हुआ है।भारतीय सामाजिक संरचना के अंतर्गत सतीप्रथा, बाल–विवाह, बहु–विवाह, छुआछुत, जजमानी व्यवस्था, अंधविश्वास, पाखंड तथा आडंबर का वातावरण व्याप्त था। लोग परंपरा तथा अंधविश्वास के नाम पर मानव अधिकार का हनन कर रहे थे। आधुनिक शिक्षा के विकास के साथ ही भारत में एक नए युग की शुरूआत हुई। शिक्षा के कारण लोगों के वैचारिक चेतना में परिवर्तन आया धार्मिक कट्टरता, जड़ता तथा अंधविश्वास के खिलाफ शिक्षित जनसमुहों ने अविराम संघर्ष किया।

भूमिका

शिक्षा के विस्तार के कारण परिवार की संरचना तथा प्रकार्य में व्याप्त परिवर्तन के संकेत मिल रहे है। शिक्षा के कारण गतिशीलता में वृद्धि हुई। शिक्षित व्यक्ति नए रोजगार के क्षेत्रों के क्षेत्रों से संबंधित होकर एक नइ जिंदगी की शुरूआत करता है। शिक्षित व्यक्ति बौद्धिक चेतना के विकास के कारण परिवार में व्याप्त अंधविश्वास, आडंबर तथा परंपरा के खिलाफ इस प्रकार शिक्षा के कारण संयुक्त परिवार का तीव्र विघटन आरंभ हुआ। परिवार में नई बौद्धिक संस्कृति विकसित हुई। सामाजिक गतिशीलता के कारण परिवार के सभी सदस्यों का एक छत के नीचे रहना संभव नहीं रह गया। निर्णय की प्रक्रिया में परिवार के मुखिया के तानाशाही के दिन लद गए। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से शिक्षा के कारण परिवार के कई सदस्यों का संबंध औद्योगिक अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ गया। आधुनिक शिक्षा ने परिवार के एक बच्चे को दुनिया के विभिन्न परिवेशों एवं स्वरूपों से साक्षात्कार का अवसर प्रदान किया। शिक्षित व्यक्तियों में घर की महिलाओं के प्रति एक नए दृष्टिकोण का उदय हुआ तथा परिवार में पूर्व की अपेक्षा महिलाओं को भी सम्मानजनक स्थान प्रदान किया गया।

परम्परागत भारतीय परिवार संयुक्त प्रकृति के थे जिनमें तीन या चार पीढ़ियों के सदस्य साथ–साथ रहते, भोजन एवं पूजा करते और जिनकी सम्पत्ति सामूहिक होती थी। परिवार से संबंधित सभी निर्णय परिवार का वयोवृद्ध व्यक्ति लेता था और वही अन्य सदस्यों पर नियंत्रण रखता था। समाज में भी व्यक्ति के स्थान पर परिवार का ही महत्त्व था। परिवार का सदस्य व्यक्तिगत हितों के स्थान पर सामूहिक हितों को अधिक महत्त्व देता था, किन्तु वर्तमान समय में शिक्षा के कारण परिवारों के संरचना और कार्यो में कई परिवर्तन आ रहे है।

अब संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है और उनके स्थान छोटे–छोटे एकाकी परिवार बन रहे हैं। परिवार में वयोवृद्ध लोगों का सम्मान एवं नियंत्रण घटा है तथा स्त्रियों की स्थिति उन्नत हुई है। परिवार से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय युवा पीढ़ी के सदस्यों की भी सलाह ली जाने लगी है। इस प्रकार पुरूष–प्रधान परिवार में स्त्री–पुरूषों की समानता के विचारों को बल मिला है और वयोवृद्धों ने युवा लोगों को महत्त्व को स्वीकार किया है। परिवार में सामूहिकता का स्थान व्यक्तिवादिता ने लिया है और प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तगत हितों के प्रति अधिक जागरूक है।

कुछ समाजशास्त्री सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन में भेद नहीं करते हैं। डासन और गेटिस के शब्दों में सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन हैं क्योंकि संस्कृति अपनी उत्पत्ति, अर्थ और प्रयोग में सामाजिक है। इसके विपरीत कुछ समाजशास्त्री इन दोनों को भिन्न मानते हैं। वास्तविकता यह है कि सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन में अंतर होता है। सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है समाज की संरचना अर्थात् अन्तःक्रियाओं में परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन का अर्थ है समाज की संस्कृति के मूल तत्त्वों अर्थात् रहन–सहन एवं खान–पान की विधियों, रीति–रिवाजों, कला–कौशलों, संगीत–नृत्य, धर्म–दर्शन, आदर्श–विश्वास और मूल्यों के विशिष्ट रूप में परिवर्तन। यह बात दूसरी है कि इस परिवर्तन को व्यवहार में सामाजिक परिवर्तन के रूप में ही देखा जाता है। जैसे कुछ समय पूर्व तक हमारे समाज में सवर्ण और अछूत एक–दूसरे से अलग रहते थे और यदि ब्राह्मण अछूत से छू जाते थे तो उन्हें स्नान करना पड़ता था, परन्तु आज सभी जातियों के बच्चे एक साथ स्कूलों में पढ़ते हैं, एक साथ मोटर और रेलगाड़ियों में सफर करते है और एक साथ दफ्तरों में काम करते है। सवर्ण और अछूतों के सामाजिक सम्बन्धों के इस परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते है। अब यदि सवर्ण और अछूतों के मस्तिष्क से यह वर्ग भेद समाप्त हो जाए और उनमें रोटी–बेटी के संबंध होने लगे तो यह सांस्कृतिक परिवर्तन होगा।

यहाँ स्पष्ट करना उचित प्रतीत होता है कि यह आवश्यक नहीं है कि सभी सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन हो, परंतु यह आवश्यक है कि सभी सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन होते हैं।

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का गहरा संबंध है। कोई समाज अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा ही करता है। सामाजिक दृष्टि से शिक्षा के समस्त कार्यो को दो वर्गो में अभिव्यक्त किया जा सकता है– एक सामाजिक नियंत्रण और दूसरा सामाजिक परिवर्तन। सामाजिक नियंत्रण का अर्थ है समाज की संरचना, उसके व्यवहार प्रतिमानों और कार्य–विधियों की सुरक्षा और सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है समाज की संरचना, उसके व्यवहार प्रतिमानों और कार्य–विधियों में परिवर्तन। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। यह समाज में होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करती हुई आगे बढ़ती है और बदलते हुए समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में मनुष्य की सहायता करती है। ज्ञान और तकनीकी में वृद्धि शिक्षा के माध्यम से ही होता है। जिसके पास जितना अधिक शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान होता है वह उतनी तेजी से आगे बढ़ती है।

बौद्धिक चेतना को जीवंत करने मे आधुनिक शिक्षा की भूमिका

भारतीय सामाजिक संरचना में जाति व्यवस्था के कारण एक संस्तरण मौजूद है। खान–पान, सहनिवास तथा विवाह के आधार पर जातियों एवं उपजातियों में सामाजिक दूरी कायम है। कुछ जातियों को विशेष अधिकार प्राप्त हैं तथा कुछ जातियों को निर्योग्य करार दिया गया है। आधुनिक शिक्षा के विकास के कारण जाति व्यवस्था की जड़ता तथा जाति के नाम पर सामाजिक दूरी को सीमित करने में आधुनिक शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है। आधुनिक शिक्षा के कारण लोगों में एक नई जागरूकता पैदा हुई तथा जाति के नाम पर छुआछुत, सामाजिक दूरी, खान–पान तथा सामाजिक व्यवहार में व्याप्त जड़ता के तत्वों पर प्रहार किया गया। परम्परागत जाति व्यवस्था में खान–पान से संबंधित नियम थे, प्रत्येक जाति का एक निश्चित व्यवसाय था, जातियों में उच्चता एवं निम्नता का एक क्रम था, उच्च जातियों को निम्न जातियों की तुलना में सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में कुछ विशेषाधिकार प्राप्त थे और प्रत्येक व्यक्ति अपनी जाति में विवाह करता था, किन्तु आधुनिक शिक्षा के कारण जाति के नियमों में शिथिला आयी है और अस्पृश्यता कम हुई है। अछुत जातियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थिति में सुधार हुआ और विभिन्न जातियों के बीच समानता एवं भाईचारे के भाव पनपे। खान–पान के नियमों मं ढिलाई आयी और निम्न एवं उच्च जातियों के लोग होटलों आदि में साथ–साथ बैठकर खाने–पीने लगे। कच्चे एवं पक्के भोजन का भेद समाप्त हुआ और कई

ब्राह्मण भी अब मांस–मदिरा का उपयोग करने लगे। आजकल अन्तर्जातीय विवाह गाँवों में भी देखने को मिल जाते है। अब एक व्यक्ति अपनी जाति के परम्परागत व्यवसाय के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय भी करने लगे है। यही नहीं बल्कि एक व्यक्ति अपने जातिगत व्यवसाय के स्थान पर नवीन व्यवसाय भी करने लगे है। यही नहीं बल्कि एक व्यक्ति अपने जातिगत व्यवसाय के स्थान पर नवीन व्यवसाय भी अपनाने लगा है। निम्न जातियों को संविधान में दिये गये अधिकार एवं आरक्षण के कारण ये जातियाँ राजनीति में भी शक्ति ग्रहण कर रही है। अब अछूत जातियों धार्मिक स्थानों, मन्दिर, सार्वजनिक स्थानों, पार्क, बगीचों, तालाब एवं कुओं आदि का भी उपयोग करती है। शिक्षा के प्रसार के कारण ये अधिकारों एवं मांगों के प्रति अधिक सजग एवं प्रतिस्पर्द्धी है।

आधुनिक शिक्षा के विकास के कारण नए वैज्ञानिकतत्वों का विकास हुआ। कृषि व्यवस्था के क्षेत्र में भी आधुनिक कृषि संयंत्रों के उपयोग की शुरूआत की गई। फलत कृषि उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा के कारण विशेषरूप से ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न जातियाँ जजमानी व्यवस्था द्वारा एक–दूसरे से बंधी हुई थी और परस्पर सेवाओं का आदान–प्रदान करती थी।कमीन जातियाँ जजमान जातियों की सेवा करती। बदले में उन्हें फसल पकने पर निर्धारित मात्रा में अनाज और घास आदि दिया जाता। जन्म, मृत्यु और विवाह आदि के अवसर पर भी उन्हें खाना, वस्त्र एवं नकद आदि में भुगतान किया जाता था, किन्तु शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण गाँवों में जजमानी व्यवस्था काफी कुछ समाप्तप्राय हो चुकी है। अब सेवाकारी जातियाँ जैसे नाई, धोबी, लुहार, सुनार, ढ़ोली, आदि नकद पैसा लेकर सेवा देने लगे है।

आर्थिक समृद्धि के कारण ग्रामीणों के जीवन–स्तर में वृद्धि

परम्परागत रूप से कृषि हल एवं बैल की सहायता से की जाती थी। कृषि के औजार, खाद एवं बीज उन्नत प्रकार के नही थे। अत प्रति एकड़ उत्पादन कम होता था। किन्तु वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा के कारण गाँवों में किसानों ने कृषि के नवीन औजारों, बीजों, खादों एवं सिंचाई के नवीन साधनों का प्रयोग करना सीख लिया है। इससे प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ा है और कृषकों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आया है। ग्रामीण किसान अब स्वयं की एवं गाँव की आवश्यकता पूर्ति के लिए ही उत्पादन नहीं करता है वरन् वह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से जुड़ गया है। वह अपने माल की बिक्री नगर की मण्डियों में करता है। आर्थिक समृद्धि के कारण ग्रामीणों के जीवन–स्तर में भी वृद्धि हुई है।

सामाजिक संबंधों के क्षेत्र में भी आधुनिक शिक्षा के कारण अनेक प्रकार के परिवर्तन के संकेत मिल रहे है। परंपरागत जड़ता के दिन लद गए है। तथा ग्रामीण क्षेत्रों में भी अब शिक्षण संस्थानों में सभी जाति तथा वर्ग के छात्रों का प्रवेश निर्बाध रूप में हो रहा है। इसी तरह शिक्षकों की नियुक्ति में भी जाति–बिरादरी अथवा धर्म के आधार पर भेद–भाव समाप्तप्राय है। यदि किसी सीमांत ग्रामीण क्षेत्रों में जाति–बिरादरी तथा धर्म के आधार पर भेद–भाव के संकेत मिलते हैं तो उसका व्यापक स्तर पर विरोध होता है।

निष्कर्ष

आधुनिक शिक्षा के कारण व्यापक स्तर पर जाति–व्यवस्था प्रभावित हुआ है। जाति व्यवस्था के अंतर्गत परंपरागत रूप से प्रत्येक जाति एक या एक से अधिक जाति व्यवसाय से जुड़ी होती थी। उदाहरणस्वरूप बढ़ई लकड़ी के काम से संबंधित है तथा लोहार लोहे के व्यवसाय से जुड़ा हुआ है। इसी तरह अन्य जातियों का भी अपना–अपना व्यवसाय है। यह व्यवसाय पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता था। आधुनिक शिक्षा के कारण अब एक लोहार का लड़का भी आई. आई. टी. जैसी प्रतियोगी परिक्षाओं में सफलता प्राप्त कर आई. आ. टी. संस्थानों में दाखिल ले सकता है व ले रहा है। एक बढ़ई का लड़का सी.बी.सी.ई. की प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर प्रतिष्ठित मेडिकल संस्थानों में प्रवेश प्राप्त कर सकता है। अब आधुनिक शिक्षा के कारण नए–नए दरवाजे खुल गए है। इस लंबी–चौड़ी दुनिया में अपनी क्षमता, प्रतिभा और मेघा के आधार पर लंबी–चौड़ी दुनिया में अपनी क्षमता प्रतिभा और मेघा के आधार पर आदमी कहीं से कहीं तक जा सकता है। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा के कारण जाति संरचना पर गहरा प्रहार हो रहा है तथा सदियों से चली आ रही जातिगत जड़ता तथा अहंकार के दिन अब लद चुके है।

संदर्भः

1. गवा, ओम प्रकाश (2010): राजनीतिक सिद्धांत की रूपरेखा, मयूर पेपरबैक्स, पृ0 26
2. शर्मा, रामविलास (1986): मार्क्स त्रोत्स्की और एशियाई समाज, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 69
3. सांकृत्यायन, राहुल (1954): कार्ल मार्क्स, किताब महल, इलाहाबाद, पृ0 73
4. शोभा, सावित्री चन्द्र (1976): समाज और संस्कृति, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ0 32
5. ओरो, रेमों (1967): मेन करंट्स इन सोशियोलॉजिक थॉट, वोल्यूम, 2, पेंगुइन बुक्स, लंदन, पृ0 68
6. मुखर्जी, आर. एन. (1997): एन आउट लाईन ऑफ साइकोलॉजी, किताब महल, इलाहाबाद, पृ0 265
7. दुबे, श्यामाचरण (1975): परंपरा इतिहास बोध और संस्कृति, भारतीय नेशनलप पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ0 57
8. मुखर्जी, राधाकमल (1955): दी सोशल स्ट्रक्चर ऑफ वेल्यूज, मैकमिलन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, लंदन पृ0 320